क्या–क्या हो बच्चों की एक किताब में

बच्चों की किताबों के बारे में आमधारणा यह रहती है कि बच्चों के लिए रंग–बिरंगी, बड़े अक्षरों व सरल शब्दोंवाली किताबें अच्छी होती हैं। इसके साथ ही बाजार में उपलब्ध विभिन्न पुस्तकों में यह देखा जाता है कि कहानी के पात्र तो बच्चे व पशु–पक्षी हो सकते हैं लेकिन वे बड़ों की सोच के आधार पर अपने क्रियाकलाप करते हैं, अपना तर्क रखते हैं। ऐसी बहुत सी सामग्री से बाजार पटा हुआ है। इस कारण बच्चों की अच्छी किताबों को पहचानने के लिए हमें थोड़ी और गहराई से समझ बनाने की जरूरत पड़ती है। इसके लिए हमें बच्चों की किताबों से जुड़े अन्य पहलुओं पर भी समझ बनानी होगी। इस आलेख में हम बच्चों की अच्छी किताबों से जुड़े कुछ संकेतकों पर समझ बनाने का प्रयास करेंगे।

बच्चों की छवि

सर्वप्रथम हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि बच्चों की हमारे मन में क्या छवि है? इस छवि को मौजूदा बाल पुस्तकों में किस तरह से चित्रित किया गया है। इसके अंतर्गत यह ध्यान देना जरूरी है कि बाल साहित्य में बच्चे की स्वतंत्र छवि का होना जरूरी है जिसमें उसकी अपनी बात, अपनी सोच, अपनी कल्पनाशीलता व तर्कशीलता दिखाई दे। इसमें बच्चों की स्वयं निर्णय लेने की क्षमता, अपना तर्क रखने की क्षमता आदि आंतरिक मूल्य दिखाई पड़ने चाहिए। इसका उदाहरण प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' में दिखाई देता है। इस कहानी में जहाँ एक बच्चे की अपनी दादी के प्रति संवेदनशीलता उभर कर आती है, वहीं दूसरी तरफ यह बात भी सामने आती है कि हामिद इस कहानी में कहीं न कहीं स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकने वाली स्थिति पर भी कायम रहता है। कहानी में हामिद चिमटा लेने के पक्ष में अपने तर्क मजबूती से रखता है और अपनी दादी के लिए चिमटा खरीद लेता है, जबकि उसके साथी विभिन्न प्रकार के खिलौने खरीदते हैं। यह बच्चों के लिए कहानी का एक ठोस आंतरिक मूल्य है, इसे समझने की जरूरत है।

इसी तरह नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'बस की सैर' की मुख्य पात्र वल्ली भी अपनी सहज जिज्ञासा का उपयोग करते हुए बस की यात्रा करती है। अपने तर्कों से वह बस कंडक्टर व बस के यात्रियों को संतुष्ट करती है। इस कहानी में एक बच्ची अपनी सोच, अपना तर्क और अपनी जिज्ञासा दर्शाती है जो कि एक आधुनिक सामाजिक मूल्य है।

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित एक अन्य पुस्तक 'कजरी गाय झूले पर' में भी गाय के माध्यम से बच्चों के मनोभावों को समझा जा सकता है। यहाँ एक गाय अपने रोजमर्रा के कार्यों को छोड़कर स्वतंत्र रूप से सोचते हुए झूला झूलने का अनुभव लेना चाहती है।

बच्चों की किताबों के अन्य संकेतकों को समझने के लिए हम कुछ और किताबों पर निगाह दौड़ा सकते हैं। मसलन, चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक –'बुढ़िया की रोटी' को एक

लोककथा के रूप में गूँथा गया है। इसमें घटनाओं का बार–बार दोहराव है और यह कहानी बच्चों के परिवेश से सशक्त रूप से जुड़ी हुई है। इस तरह की कहानी में बच्चों को घटनाओं के दोहराव के माध्यम से यह अंदाज लगाने का मौका मिलता है कि आगे बुढ़िया किस–किस के पास जाएगी? और रोटी पाने का प्रयास करेगी। ताराबाई मोदक की कहानी 'खीरा खाऊँ कचर–कचर' में भी इसी किस्म का दोहराव है। अक्सर यह देखा गया कि इस तरह की कहानियाँ बच्चों को पसंद आती हैं।

कई दफा बचपन की घटनाएँ या बाल सुलभ अनुभव भी बच्चों को बहुत भाते हैं। उदाहरण के लिए चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'ननिहाल में गुजरे दिन' को याद कर सकते हैं। इसमें बचपन की घटनाएँ सहज रूप से एक के बाद एक सामने आती हैं। बच्चे इन्हें पढ़ते हुए कहीं न कहीं अपनी छवि को देखते हैं, अपने अनुभव से जोड़ते हुए उसमें आनंद पाते हैं।

चित्रों का महत्त्व

बाल साहित्य में चित्रों के बारे में मूलभूत बात यह है कि बच्चों की किताबों के चित्र पर चर्चा गत्यात्मक होनी चाहिए जिससे बच्चों को लगे कि इनमें कुछ घटित हो रहा है, बजाय केवल स्थिर चित्र होने के। ऐसी ही कुछ बात चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'महागिरी' के चित्रों में देखी जा सकती है। इसमें हाथी के चेहरे पर उजागर समस्त भाव देखे जा सकते हैं। इसी तरह 'प्यासी मैना' को भी देख सकते हैं। चित्रों के लिहाज से ऐसे ही कुछ और नाम याद आते हैं– नेशनल बुक ट्रस्ट की 'दादी ने की बुनाई', 'चौदह चूहे घर बनाने चले', 'कजरी गाय झूले पर', स्कॉलिस्टिक इंडिया की 'पाजी बादल' आदि। इन सभी में चित्र न केवल महत्त्वपूर्ण हैं वरन् वे किताब के पाठ्य को समृद्ध भी करते हैं। बच्चे इन चित्रों की बारीकियों में जा सकते हैं और चीजों को खोजने का प्रयास कर सकते हैं। इसके साथ ही जो बच्चे ठीक से पढ़ नहीं पाते वे भी चित्रों के माध्यम से कहानी को समझने की कोशिश करते हैं और उसका स्वयं विस्तार करते हैं।

चित्रों के अंतर्गत यह बात भी देखने की है कि चित्रों में समाज की छवि किस तरह से दिखाई गई है। चित्रों में अमीर–गरीब, शहरी–ग्रामीण, जातिगत व लैंगिक भेदभाव आदि तो नहीं दिखाया गया है।

तयशुदा चरित्र

बच्चों की अधिकतर पुस्तकों में बच्चों के चरित्र गढ़े हुए होते हैं और वे एक वयस्क के नजरिए से सोचते या क्रियाकलाप करते हैं। इससे कहानियाँ एक ही सपाट ढर्रे पर चल पड़ती हैं और उनमें बच्चों के कोई अनुभव नहीं दिखाई पड़ता।

आमतौर पर कहानियों के चरित्रों में एक तरफा नायकत्व के गुण भरे होते हैं जिससे आसानी से स्पष्ट हो जाता है कि कहानी में कौन नायक है? और कौन खलनायक? कहानी में नायक हर समस्या का निदान खोज लेता है और अंत में विजय प्राप्त करता है। ऐसी कहानियाँ बच्चों को कोई नई दृष्टि

प्रदान नहीं करती। इन्हें 'चंपक' व विभिन्न प्रकार की कॉमिक्स में अक्सर देखा जा सकता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान में बाल साहित्य में चली आ रही रूढ़ छवियों को तोड़ने की जरूरत है।

भाषा

भाषा के स्तर पर यह कहा जाता है कि बच्चों के लिए सरल वाक्य हों। परंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि अगर भाषा में बच्चों के स्थानीय परिवेश के कई शब्द सहजता से आते हैं तो उनको लेकर समस्या नहीं होनी चाहिए। इस बात को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि बच्चों के लिए भाषा बनावटी न हो। अगर सहज रूप से इस्तेमाल किए जाएँ तो कठिन शब्दों को भी बच्चे कहानी के संदर्भ द्वारा अनुमान लगाकर समझ सकते हैं। गुलजार द्वारा बच्चों के लिए रचित रचनाएँ 'पाजी बादल', 'बोस्की का पंचतंत्र', 'बोस्की के ब्राह्मण', 'पोटली बाबा' की आदि पुस्तकों में भाषा का प्रवाह और किस्सागोई देखने मिलती है और उर्दू के शब्द भी मिलते हैं। इससे कहानी समृद्ध ही होती है। ऐसी ही बातें 'ननिहाल में गुजरे दिन' में भी दिखाई देती हैं।

मूल्य

बाल साहित्य के संदर्भ में हमें यह भी समझना चाहिए कि हम एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में रहते हैं। उसका एक संविधान है। उसके कुछ संवैधानिक मूल्य–समता, न्याय, धर्मनिरपेक्षता आदि हैं। इन संवैधानिक मूल्यों को बच्चों की किताबों में देखा जाना चाहिए। तभी भारत जैसे एक बहुभाषी–बहुसांस्कृतिक देश में जातीय व लैंगिक भेदभाव, शहरी–ग्रामीण, अमीर–गरीब आदि के बीच संवेदनशीलता की बात पैदा हो पाएगी।

अगर नैतिक मूल्यों के विकास की बात करें तो हमें यह समझना चाहिए कि इनका विकास होना एक जटिल प्रक्रिया है। ये मूल्य निरपेक्ष भी नहीं हैं। इन्हें बच्चों की किताबों में जानबूझकर रखना या ढुँढना एक निरर्थक बात है। हमें यह भी सोचना चाहिए कि हमारे स्कूलों में अधिकतर गरीब व दलित बच्चे, स्लम के बच्चे, जनजातीय क्षेत्र के बच्चे, लड़कियाँ, अल्पसंख्यक बच्चे ,विकलांग बच्चे भी पढ़ते हैं। इन बच्चों के जीवन व समाज के प्रति एक संवेदनशील नजरिए को उभारने वाली रचनाएँ बच्चों की किताबों में होनी चाहिए। इन मूल्यों को किताबों की कहानियों व चित्रों में देखा जाना चाहिए।

उक्त किताबों के उदाहरण के लिए स्कॉलिस्टक द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'बोनू और सलीम' 'बारिश का एक दिन', 'गाँव का बच्चा'। एकलव्य द्वारा प्रकाशित 'छुटकी उल्ली' व 'श्रम की महिमा'। तूलिका द्वारा प्रकाशित 'क्यों–क्यों छोरी', 'सॉरी बेस्ट फ्रेंड', 'मुकुन्द एंड रियाज', 'जू की कहानी', 'इस्मत की ईद' आदि किताबों को देखा जा सकता है।

लेखक– कमलेश चन्द्र जोशी, संदर्भ अंक 46 में प्रकाशित।